Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-14, Issue-1, June-2020
www.researchguru.net

राजतरंगिणी में राजवंश

पूनम कुमारी
शोध छात्रा, इतिहास विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा,(बिहार)

परिचय :

'राजतरंगिणी' कल्हण का एक संस्कृत काव्य–ग्रंथ है। इसकी रचना सन 1148 ई. से 1150 ई. के मध्य की गयी। कश्मीर के कालानुगत राजाओं की काल – दशाओं को आठ अध्यायों (तरंगों) एवं 7826 श्लोकों के माध्यम से वर्णित किया गया है। कश्मीर निवासी कल्हण ने इस ग्रंथ की रचना में ग्यारह अन्य ग्रन्थों की मदद ली जिनमें अब केवल नीलमत पुराण ही उपलब्ध है। कल्हण ने कश्मीर की राजनीतिक उथल–पुथल का विशद व्याख्यान पूरी सूक्ष्मता एवं ईमानदारी से किया है। आरंभिक भाग में पुराणों के ढंग का विवरण अधिक है जबकि बाद की अवधि का विवरण पूरी ऐतिहासिक निरपेक्षता से किया गया है। अतिरेक भाव के साथ कल्हण ने तत्कालीन भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण सन्दभों को यथेष्ट स्थान प्रदान किया है। यही कारण है कि राजतरंगिणी के उद्धरण अधिकतर ईतिहासकारों के सन्दर्भ–तथ्य बन गये हैं।यह ग्रंथ राजनीति के अतिरिक्त सदाचार एवं नैतिक मूल्यों पर भी पर्याप्त प्रकाश डालते हुए राजाओं के गुण–दोषों की विवेचना करता है।

मुख्य शब्द : *राजतरंगिणी, कालानुगत, गणराज्य , विकासशील , समकालीन, कालानुगत*

उदेश्य :

प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य कल्हण की 'राजतरंगिणी' में वर्णत एवं विश्लेषित राजानुप्रेरित जनप्रभावी ऐतिहासिक तथ्यों को अनुरेखित करना है। यह अध्ययनानुगत अवधि के कश्मीर के राजाओं के राजकौशल एव ं लोकोन्मुरव कार्यवृत का सम्यक चित्र प्रस्तुत करता ह।

स्रोत :

यह शोध– पत्र मूलतः कल्हण की 'राजतरंगिणी' पर आधारित है। साथही पी.एन.के. बामजई (1994) की पुस्तक Culture and Political History of Kashmir (3 Volumes) से सन्दर्भानुपरक तथ्यों पर गहन विमर्श किया गया हें। पुनः विजयेन्द्र माथुर की ' ऐतिहासिक स्थानावली ' एवं मोहम्मद हसन की पुस्तक 'History of Kashmir' से इस पत्र को तीक्ष्णता मिली है। इतिहास एवं संस्कृत की सन्दभोंपयोगी पुस्तकों से अतीव मदद मिली है।

अध्ययन विधियाँ :

इस पत्र में विवेचनात्मक एवं तुलनात्मक विधियों का प्रयोग हुआ है। कालानुगत उदघाटित तथ्यों के अंर्तसंबंधों का विश्लेषण लोक जीवन के सापेक्ष करने की कोशिश की गयी है। कश्मीर की गरिमा एवं सांस्कृतिक विरासत का अनक्षैत्रीय निरूपण शब्दानुगत है। राजादेशों एवं जनाकांक्षाओं के मध्य की अंतर्धाराओं का साहित्यिक सौष्ठव, सहज एवं बोधगम्य बनाया गया है।

विवरण :

कल्हण की रचना ' राजतरंगिणी ' में कश्मीर के राजदरबारों की गाथा है। इन्होंने अपने श्लाघनीय उद्ययोग के द्वारा पुराकाल से आरम्भ कर 12 वीं शदी तक का कश्मीर–इतिहास निरूपित किया है। संस्कृ त में रचित इस रचना मे आठ तरंग हैं। यद्यवि इसके ऐतिहासिक काल–क्रम पूर्णतः स्वीकार्य नहीं है तथापि इतिहासकार एवं मानवशास्त्री इसे सन्दर्भ ग्रन्थ मानते हैं। इस ग्रन्थ में 7,826 दोहे हैं। मान्यता है कि राजतरंगिणी की रचना कश्मीर–राजा सुस्सल के पुत्र राजा जयसिंह (1128–1159 इ.) के राज्यकाल में की गयी। सन् 1148 ई. में कल्हण.ने इतिहास लिखना आरंभ किया और 1150 ई. में यह रचना इतिश्री को प्राप्त की।

कल्हण के पिता चणपक तत्कालीन कश्मीर नरेश हर्षदेव (1089–1101) के प्रधान अमात्य थे। राजा की हत्या के बाद इन्होने सेवा कार्य से सदा के लिए संन्यास ले लिया। स्पष्टतः कल्हण कश्मीर की राजव्यवस्था से निकटस्थ थे। इन्होंने उस समय तक की राज कथाओं, कीर्ति कथाओं,महाकाब्यों,नृपावलियों,स्मारक अवशेषों,परिवार आभिलेखों,पुराण–अख्यिाओं,सिक्कों आदि का गहन अध्ययन किया एवं अपने ज्ञान सागर से मुक्ताभ रचना भारत को समर्पित किया। यह रचना उनके इतिहास बोध एवं साहित्य–शक्ति दोनों का समन्वित उद्योग है।

राजतरंगिणी के आरंभ के तरंगो में वर्णत भूपाल पौराणिक गाथाओ के आधार पर अंकित है।इस कारण ,अनेक अंशों मे ये कल्पना–जगत् के ही जीव हैं, प्रामाणिक इतिहास के पात्र नहीं। पर ज्यों–ज्यों कवि अपने काल–रवंड की ओर बढ़ता है,त्यो–त्यों उसका इतिहास प्रामाणिक एवं सच्चा उतरता जाता है।

कल्हण की पुस्तक कलियुग एवं लौकिक युग की चर्चा करती है। इसी एसेन्शन (सप्तर्षि) इयर(वर्ष

) की गणना जोगेस चन्दर दत्त ने की है। यह 2448 BCE आता हे। आरम्भ गोनन्द नामक राजा से होती हे ,जो द्वादश शती ईसा पूर्व से भी पहले की सूचना पर आधारित है। 813–14 ई. से 1150 ई. तक की घटनाएँ नितान्त ही पूर्ण एवं ऐतिहासिक है। अष्टम तरंग की घटनाएँ शक्ति के साक्षात दर्शन एवं प्रभूत अनुभव के उपर आश्रित होने के कारण अत्यन्त प्रामाणिक हैं।

कश्मीर का क्षेत्र 1586 ई. में मुगल शासक ' अकबर ' द्वारा अपने राज्य में मिला लिया था पर पश्चवर्ती वर्षों में क्षत्रिय राजवंश् का पुनः शासन हो गया। सन 1950 के बाद भी ' कल्हण ' के चिन्तन कश्मीर को अतीव प्रभावित करते रहे है। वर्तमान कश्मीर भारत गणराज्य का आभिन्न अंग है और भारत की सम्प्रभुता के अंतर्गत विकासशील है।

'तरंग' एवं राजवंश :

कल्हण के आठो तरंगों में राजाओं की शासन–व्यवस्था, वैमनस्य, युद्ध' एवं राज्याभिषेक की चर्चा है।

तरंग प्रथम :

प्रथम तरंग की शुरूआत गोनन्द राजा से होती है। ये भगवान कृष्ण के दुष्मन मगध शासक जरासिंधु के संबंधी थे। ये गोनन्द प्रथम कृष्ण के भाई बलराम द्वारा मारे गये। समकालीन नृप दामोदर प्रथम की हत्या कृष्ण के मित्र ने कर दी। तब कृष्ण ने इनकी गर्भवती पत्नी यशोवती को राजगद्धी दिलवायी। तत्पश्चात् यशोवती एवं दामोदर प्रथम का पुत्र गोनन्द द्वितीय राज्यासीन हुआ।

कथाक्रम में अनेक अप्रामाणिक राजा यथा लव, कुश, खगेन्द्र एवं सुरेन्द्र (एकवंशीय) तथा दूसरे वंश के गोधरा, सुवर्नो, जनक एवं शचीनारा की चर्चा आती है। पुनः दामोदर द्वितीय नामक राजा का उल्लेख है, जिन्होंने 'दामोदरसुदा' नाम का शहर बसाया एवं गुड्डासेतु डैम बनवाया। लेखनी के साथ ' तुराष्का' मूल के बौद्ध राजा हुष्का, जुष्का एवं कनिष्क पंक्तिवद्ध है। कनिष्क ' कुषाण' वंश के थे।' नाग' देवता ने बौद्ध प्रभाव को रोका एवं चन्द्रदेव राजा ने शिव की पूजा कर शैव पद्धति को सुदृढ़ किया।राजकीय अनुकूलता के साथ गोनन्दित्य वंश की स्थापना हुई।इस वंश के प्रथम एवं संस्थापक राजा गोनन्द तृतीय हुए।

गोनन्दित्य वंश :

गोनन्द तृतीय इस वंश की स्थापना से 1182 BCE तक शासक रहे। इन्होने नाग नियमों की पुर्नस्थापना की।वंशानुगत कड़ी विभीषण प्रथम 1182–1147 BCE तक (35 वर्ष), इन्द्र 1147–1094 BCE तक (53 वर्ष) एवं अन्य राजा 1058 BCE तक बने रहे। तत्पश्चात् नारा प्रथम 1058–1023 BCE तक नृप थे। इन्होंने एक ब्राह्मण पत्नी जो नाग स्त्री थी, के साथ दु०र्यवहार किया। प्रतिक्रियास्वरूप नागा प्रमुख ने राजा के शहर को जला दिया और राजा आग में जल गया। कुछ समय तक इसका वेटा ' सिद्धा ' ओंर फिर इसका भाई 1023–983 BCE तक शासन संभाला। तत्पश्चात सिद्धा का पुत्र उत्पलक्षा 983–923 BCE तक और क्रम से इसके कुलभूप 795 BCE तक राज किये। यह बसुकुल का समय जब म्लेच्छों (हूण) ने कश्मीर फर धावा बोला।

795 BCE में हूण क्रूर राजा, मिहिरकुल शासन संभाला। 735 BCE तक शासन करते हुए सिंहासा राज्य पर आक्रमण' किया। चोला, कर्नाटा आदि राजाओं को मार भगाया एवं वापस आकर कश्मीर में स्त्रियों, बच्चों एवं पुरूषों की हत्या करवाया। इसके बाद 'वंक' राजा बने और 735–665 BCE तक राज किये। इनकी हत्या वत्रा नाम की महिला ने करवा दी फर इसका पूत्र क्षिनिनन्दा 665–602 BCE तक शासन में रहा। वंशानुगत राजा होते गये और शासन 282 BCE तक कायम रहा।तत्पश्चात युधिष्ठिर प्रथम 246 BCE तक शासक रहे। ज्ञानी मंत्रियों ने भगा दिया। फिर इनका पुत्र मेघवाहन वंश को आगे बढ़ाया।

तरंग–द्वितीय :

इस तरंग में प्रगपादित्य राजा 167-135 BCE तक एवं 135-103 BCE तक इसका जालुका राज्य चलाया। समकालीन राजपुरूष 103-67 BCE तक शासक थे और इनकी मृत्यु के पश्चात दूसरे वंश के विजय नामक राजा 67-59 BCE तक और बाद में इनका पुत्र जयेन्द्र 59-22 BCE तक राज किये। अपनी गलतियों के कारण शासन इनके ही मंत्री सन्धिमती को हस्तगत हो गया। वह शैव था। 22 BCE से 25 CE तक शासन कर स्वेच्छा से शासन मेघवाहन वंश पुत्र को सौंप दिया।

तरंग– तृतीय :

तृतीय तरंग में राज–शासन की निरंतरता मेघवाहन के 25 CE-59 CE तक के नृपत्व के साथ बनी रहती है। इनके पुत्र श्रेष्ठसेन, पौत्र हिरण्य एवं

हिरण्य के भतीजे प्रवरसेन 120 CE तक शासक बने रहे।

कल्हण के अनुसार उज्जमिनी के शासक विक्रमादित्य ने शक को हराया और अपने मित्र मैत्री गुप्त को कश्मीर का राजा वनाया। ये 120CE - 125CE तक शासन में रहे। पुनः विक्रमादित्य की मृत्यु के बाद मैत्रीगुप्त ने प्रवरसेन द्वितीय को शासन सौंप दिया।इन्होंने विक्रमादित्य के पुत्र मिलादित्य को उज्जैन का राजा वनवाया। प्रवरसेन प्रवरपुरा शहर बसाया। यह आज श्रीनगर कहलाता है। प्रवरसेन ने 125 CE से 185 CE (60 वर्ष) तक राज शासन किया। इसका राजवंश युधिष्ठिर द्वितीय, नरेन्द्रादित्य,खम इनके भाई राणादित्य तथा विक्रमादित्य एवं अनुज बस्थादि तक 598 CE तक चला। बलादित्य ने अपनी पुत्री अनंगलेरवा, की शादी अश्वगामा कायस्थ जाति के दुर्लभवर्धन से की।

तरंग–चतुर्थ :

चतुर्थ लरंग में करकोटा देव वंश के दुर्लभवर्धन (अनंगलेरवा के पाति) के शासन का प्राथमिक वर्णन है। ये 598 CE से 634 CE तक राजा रहे। इनके कंशज यथा पुत्र दुर्लभाका(प्रत्तापिदत्या द्वितीय) 634 CE से 684 CE तक तथा क्रम से चन्द्रपिदा, तारापिदा एवं मुक्तपिदा 733 CE तक राज शासन करते रहे। कल्हण के अनुसार मुक्तपिदा (ललितादित्य प्रथम) ने राजा ' तुषार' को हराया। इन्होंने बल्तीस्तान के भौतास, काराकोरम के दरदास, उत्तर कुरू एवं प्रागज्येतिश को अपने अधीन कर लिया। ललितादित्य की वंशरेखा कुवलयापिदा (733 CE–734 CE) वज्रादित्य द्वितीय, पृथ्वीपिदा प्रथम, संग्रामपिदा, जयपिदा(विनयादित्य) 776 CE तक शासन किया। जयपिदा गोंडा एवं कान्यकुब्ज को अधीन किया। आगे बढ़ता हुआ यह शासन काल जयपिदा के पुत्र ललितापिदा (776 CE – 788 CE) एवं क्रमशः संग्रामपिदा चिप्पत जयविदा , अजितपिदा, अनंगपिदा एवं उत्पलपिदा द्वारा 855. CE तक पूरा हुआ।

तरंग– पंचम :

इस तरंग में वर्मण वंश के राजाओं की चर्चा है। सुखवर्मण का पुत्र अर्वान्तवर्मण 855 CE से 833 CE तक शासन किया। इन्होंने अवन्तिपुरा नगर बसाया। तत्पश्चात शंरववर्मण (883 CE–902. CE) इसका पुत्र गोपाल वर्मण एवं माँ सुगंधा 906 CE तक शासन किये।

पुनः निर्नित वर्मन (906 CE–922. CE), चक्र बर्मन (922 CE–933. CE), शूरवर्मन (933 CE–934. CE). तथा बारी–बारी से ये 937 CE तक शासन में थे। उन्भत्तवन्ती एवं इनका पुत्र शूर वर्मन द्वितीय 937 CE–939 CE तक राज शासन के दायित्व पद पर थे।

तरंग– षष्ठ :

इस तरंग का प्रारंभ ब्राह्मण सभा द्वारा सन् 939 में राशस्करदेव को राजा नियुक्त करने के साथ होता है। ये सन् 948 तक रहकर संग्रामदेव को गद्धी सौंप दिये। पर संग्रामदेव की हत्या प्रवरगुप्त द्वारा किये जाने के बाद यह स्वयं ही 948 CE से 950 CE तक राजा रहा और फिर अपने पुत्र क्षेम गुप्त को शासन सौंपा। क्षेम गुप्त लोहरा वंश की अपनी पत्नी विद्दा के साथ 950 CE- से 958 CE तक सासन कर अपने पुत्र अभिमन्य द्वितीय सत्तासीन किया जो 958 CE से 972 CE तक राजसासन संभाला। 972 CE से 980 CE तक दिद्दा के पोते नंदी गुप्त, त्रिभुवन गुप्त, भीम शासक रहे। 980 CE में दिद्दा स्वयं सत्ता संभाल ली और 1003 CE तक राजशासन की। इसी वर्ष उनके अपने भाई के बेटे को राजगद्दी दे दी। इस तरह कश्मीर में राजा के रूप में लोहरा वंश की शुरूआत हुई।

तरंग– सप्तम :

सप्तम तरंग में लोहरा वंश का वर्णन मिलता है। दिद्दा की मृत्यु के बाद 1003 CE में दिद्दा का भतीजा लोहरा वंश का प्रथम राजा वना। वह 1003 CE से1028 CE तक राजा रहा। इसी वर्ष 22 दिनों के लिए हरिराजा शासक रहे। एक समकालीन राजभोगी अनंतदेव ने 1028 CE में अपने बेटे के लिए गद्धी हड़प ली। फिर यह 1028 CE से 1063 CE तक शासक रहा। इसका पुत्र कलश (रणादित्य द्वितीय) ने विद्रोह किया। पिता ने आत्म हत्या कर ली और माँ सती हो गयी। इसका शासन काल 1063 CE से 1089 CE तक रहा। पुनः कलश के पुत्र, हर्ष, ने विद्रोह किया पर वंदी बना दिया गया पर कलश का सौतेला भाई उत्कर्ष ने हसे मुक्त कराया। तब हर्ष 1089 CE से 1101 CE तक शासन किया।इसी लोहरा पारिवार के दो सेनापति उच्चला एवं सुस्साला विद्रोह कर दिए।हर्ष एवं इसका बेटा

भोज दोनो मारे गये। इसतरह लोहरा वंश का प्रथम पटाक्षेप हुआ।

तरंग– अष्टम :

अष्टम तरंग में लोहरा वंश द्वितीय का वर्णन हुआ है। इस वंश का प्रथम राजा उच्चला बना। बाद में इन्होंने अपने भाई सुस्साला को राजा बनाया। शीघ्र ही, स्वयं को यशस्करा का वंशज बताने वाला शंख राजा रद्दा ने ला की हत्या कर राजगद्दी हड़प लिया। रद्दा की मृत्यु के बाद उच्चला का सोतेला भाई सल्हना राजा बना पर सत्ता एक कुलीन ' गर्गचन्द्र के पास रही।पुनः सल्हना अपदस्थ कर दिया गया एवं बंदी बना लिया गया। तभी उच्चला का भाई सुस्सला गर्गचन्द्र के सहयोग से राजगद्दी पर आसीन हुआ। राज सत्ता हेतु अचानक नया मोड़ आया। हर्ष का पोता, भिक्षाचरा, जो उच्चला के विद्रोह के समय बचकर मालवा के राजा नरवर्मन के पास पालन–पोषण चला गया था, सुस्सला को हटाकर राजा बना। पर छः माह के अंदर ही सुस्सला राजधानी पर पुनः अधिकार कर लिया। गृह–युद्ध प्रारम्भ हो गया। दुस्सला पुत्र जयसिम्हा (सिम्हादेव) कश्मीर का राजा बना। शुरू में पिता दुस्सला के पास ही सत्ता रही पर बाद में स्वयं शासन कार्य कुशलता पूर्वक करने लगा। सिम्हादेव 22 वर्षों क्त कश्मीर के राजा बने रहे।

'राजतरंगिणी ' में कल्हण ने इसी कालखंड तक की चर्चा की है।

निष्कर्ष :

कल्हण की 'राजतरंगिणी ' में राजवंशों की चित्रावली संस्कृत के दोहों के रूप में कश्मीर के राजाओं के एतेहासिक कृत कार्य को साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं एष्ट्रीय मर्यादाओं के साथ एक अनूठी एवं सरस छवि प्रस्तुत करती है। कश्मीर राजतंत्र को केन्द्र बनाकर रचित इस ग्रन्थ में राजाओं के आखिल भारतीय पराक्रम तथा भारत के राजाओं के साथ राजकीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक संवंधों के वर्णन अती रोचक है। राजाओं में राष्ट्रीय अस्मिता का बोध चरमोत्कर्ष पर है।राज सत्ता के लिए आपसी युद्ध एवं हत्याएँ ऐतिहासिक काल खंड के सामयिक व्यवधान मात्र है। पर कश्मीर राज क्षेत्र में भारत की पौराणिक संस्कृति की धवल धारा राज सत्ता को सप्तक्त करती हुई सर्वत्र अनवरत बहती रहती है। कश्मीर के जन मन की पवित्रता का यही आधार श्रोत है। राजा सिम्हादेव का कश्मीर राजा हरि सिंह तक सम्पूर्ण राष्ट्रीय–सांस्कृतिक अक्षुण्णता के साथ हस्तांतरित होता है। कश्मीर की यही भारतीय आत्मा आसेतु हिमालय एवं हिन्दोधि–पामीर के साथ कच्छ–लोहित–परशुराम कुण्ड की ध्वनी तरंगित करती रहती है।

संदर्भ–ग्रन्थ सूची :

1. बामजई,पी. एन.के. (1994) . कल्चरल ऐंड पॉलिटिकल हिस्ट्री औफ .कश्मीर.अमित .प्रकाशन,.नई .दिल्ली.
2. दत्त, जे. सी. (1879). किंग्स औफ कश्मीर. त्रिभुवन ऐंड कम्पनी, कोलकाता .
3. पंडित, आर. एस. (1935). रिवर ऑफ किंग्स. खालसा प्रकाशन, चंडीगढ़.
4. रंगचारी, देविका (2001). राजतरंगिणी से कहानियाँः कश्मीर कथा. भूमिका ्पप्रकाशन , नई दिल्ली.
5. साधु, एस. सी. (1967). राजतरंगिणी से कहाकियाँ. आशीष प्रेस, नई दिल्ली.
6. स्टीन, एम. ए. (2007). कल्हण्स राजतरंगिणी : ए क्रोनिक्ल औफ दि किंग्स औफ कश्मीर. राइट पाब्लकेशन, नई दिल्ली.